

मथुरा प्रसाद 'नवीन'

मथुरा प्रसाद 'नवीन' के जनम 1928 में मुँगेर जिला के बड़हिया गाँव में होल हल। अब ई लखीसराय जिला के अन्तर्गत आवऽहे। इनकर सिच्छा मैट्रिक तक ही भेल हल। ई 1942 के आंदोलन में कूद पड़लन। इनकर काव्य संगरह के नाम **'रुदन का गान'**, **'पानी का बुलबुला'**, **'चुनाव का हुड़दंग'** आदि हे। ई तीनो संकलन हिन्दी भासा में हे । इनकर ख्याति प्रगतिसील कवि के रूप में होल हे।

पहिले अँग्रेज लूट-खसोट, अत्याचार आदि करऽ हल, तब लोग ओकरा विदेसी अत्याचार कहके विरोध आउ बर्दास्त करऽ हलन। बाकि जब देस के लोग भी उहे राह के राही हो गेलन तब भारतीय जनता के मोहभंग हो गेल। कुंठा, संत्रास, टीस, कसक, पीड़ा, यातना आदि आधुनिक कविता में वर्नित होवे लगल । **'राहे-राह अन्हरिया कटतौ'** कविता में कवि मथुरा प्रसाद नवीन किसान के दर्द के स्वर देलन हे। किसान के गरीबी, तड़प, दुर्दसा देखके कवि के काया मछरी नियर छटपटाए लगऽ हे। कवि 'चल रे गोला ! चल रे मैना' कहके जल के प्रवाह नियन ओकर गति के चंचलता आउ निरंतर गतिसीलता पर ही अर्थ व्यंजित कइलन हे। युग बोध आउ युग चेतना एकरा में प्रतिबिंबित भेल हे। ई मगही के कबीर कहल जा हथन।

राहे-राह अन्हरिया कटतौ

चल-रे गोला ! चल-रे मैना ! राह में कखनौ अटके नै ;
राहे-राह अन्हरिया कटतौ, काँधा अप्पन पटके नै ।

चल जल्दी चल गाँव दूर हो, अभी तो आधे ऐले हें ;
दिन दमकस भर दौनी करके, साँझे सानी खैले हें ।

चल दौड़ल चल, चल लपटल चल, मस्त बनल रह मटके नै ;
राहे-राह अन्हरिया कटतौ, काँधा अप्पन पटके नै ।

हमकी करियौ दाना-खल्ली, घी-मक्खन तो सपना हौ ;
तोरा छोड़ ई गरीब के, कोई न जग में अपना हौ ।

तोही हम्मर भाग-किरन हें, चाँद गगन में चटके नै ;
राहे-राह अन्हरिया कटतौ, काँधा अप्पन पटके नै ।

पढ़े साल परती पड़ गेलौ, एक्को बूँट उपजलो नै ;
नै लगलौ नख नेह महावर, ढोल पिपहिया बजलो नै ।

बेटी रहल कुमार, कुंडली देखल गेल उलटके नै ;
राहे-राह अन्हरिया कटतौ, काँधा अप्पन पटके नै ।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) 'गाँव दूर हो' के अरथ का हे ?
   (ख) कवि गरीब केकरा कह रहलन हे, आउ काहे ?
   (ग) ढोल पिपहिया काहे न बजल ?
   (घ) बेटी कुमार काहे रह गेल ?
   (ङ) कवि के भाग-किरन के हे ?

लिखित :

1. 'राहे-राह अन्हरिया कटतौ' कविता के कवि मथुरा प्रसाद 'नवीन' के परिचय दऽ।
2. कविता के उद्देस्य पर परकास डालऽ।
3. कवि राहे-राह अन्हरिया काटेला काहे उताहुल हे ?

भासा-अध्ययन :

1. पाठ में प्रयुक्त बिम्ब आउ प्रतीक बतावऽ।
2. कविता में आयल मुहावरा चुन के लिखऽ।

योग्यता-विस्तार :

1. ई बतावऽ कि कवि मथुरा प्रसाद 'नवीन' प्रयोगसील भावना के कवि हथ, कइसे ?
2. निम्नलिखित के संदर्भ सहित आसय लिखऽ ?

   ''हम की करिऔ, दाना-खल्ली
   घी-मक्खन तो सपना हौ
   तोरा छोड़ के ई गरीब के
   कोय न जग में अपना हौ''

3. प्रगतिवाद के बारे में चार पंक्ति में अप्पन विचार प्रकट करऽ ।
4. तोरा विचार से कवि मथुरा प्रसाद नवीन के कविता प्रगतिवादी, रहस्यवादी इया प्रयोगवादी हे ?
5. चल रे गोला ! चल रे मैना ! केकरा कहल गेल हे ?

सब्दार्थ :



करिऔ	—	करूँ
कोय	—	कोई
जग	—	संसार
परेसाल	—	पिछला साल
परती पड़ना	—	कोई उपज न होना
नख नेह महावर लगना	—	साज-सिंगार करना
पिपहिया	—	एगो बाजा के नाम
दमकस	—	औकात भर
सानी	—	गौत, खाना-बुतात
दौनी	—	दमाही ।

●●●

राम नरेश पाठक



कवि राम नरेश पाठक के जनम 12 नवम्बर 1929 के औरंगाबाद जिला के केतकी गाँव में भेल हल। इनकर 1952 **(अनामा)** 1958 **(क्वार की साँझ)** 1962 **(प्रक्रिया के एक कवि)**, 1988 **(एक गीत सिखने का मन)** 1991 **(मैं अथर्व हूँ)** आदि कविता संगरह परकासित भेल। ई नवगीत के परनेता हलन। इनकर निधन 22 अक्टूबर 1999 के हो गेल।

कोमलकांत पदावली में रचल इनकर गीत सच्चे में बड़ी तरल आउ सजल हे। संगीत लहरी पर सजल गीत जब इनकर कंठ से फूटऽ हल तब स्रोता मंत्र-मुग्ध रह जा हल।

मधुमास गीत में अंचल के प्राकृतिक सौंदर्य के मादक छटा के बेजोड़ चित्रन हे। वसंत अभी-अभी उतरल हे। मधु से मत्त सुक्ल पक्ष के रात में टह-टह उज्जर चाँदनी मानो इंद्र के कउनो अप्सरा, उर्वशी के रूप धारण करके अप्पन चमक आउ छटा बिखेर रहल हे। ई कला गीत नृत्यगीत सैली पर अधारित हे। बिम्ब विधान आउ प्रतीक योजना देखे लायक हे। अलंकार के भरमार हे कविता में।

मधुमास

मधुआ से मातल टहटह इँजोरिया
ई टहटह इँजोरिया,
जुलुम भेलइ हो, ई जुलुम भेलइ हो।
कउन उरबसिया इन्नरवा के परिया,
इन्नरवा के परिया
चमकि चललइ हो, ई जुलुम भेलइ हो।

बन-बन छुलिया परसिया के गछिया के
सउँसे देहे चिनगी फुलाये,
अमवाँ–महुइया के मनके दरदिया
ऊ धरती पर लोटे छितराये

काँची-कचनरिया के पोरे-पोरे टिसुना
तरुनि भेलइ हो, ई जुलुम भेलइ हे ।

खेतवा-पथरिया में बइठल गुजरिया
नैना के अबिरिया उड़ाये
धरती तो धरती ऊ हुलसइ अकसवा
कि धनिया के रूप न भुलाये

कोइली के बँसुली से पिलकइ दरुअवा
जे पिलकइ दरुअवा, ई जुलुम भेलइ हो ।

छोटकी ननदिया सैयाँ कलकतिया
गोरे-गोरे पतिया पेठाये
अबकी के होलिया हम्मे धनि मिलबइ
से बारहो बियोग न सहाये

फगुनी बयरिया से रसे-रसे बहकइ
जे रसे-रसे बहकइ
सुलगि उठलइ हो, ई जुलुम भेलइ हो ।

चर-चउपलवा कि खेत-खरिहनियाँ
कि बाबा के मनीरिया बउराये
अबीर गुललिया से ललकी बदरिया से
ठगिनी के नैना झमकाये

रस के तलइया में सब केउ ऊभ-चुभ
कि सब केउ ऊभ-चुभ
बिसरि गेलइ हो, ई जुलुम भेलइ हो ।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) मधुआ से मातल केकरा कहल गेल हे ?
   (ख) इहाँ 'उरबसी' सबद के परयोग काहेला करल गेल हे ?
   (ग) जुलुम का हे भेल ?
   (घ) मन के दरद का हे ?
   (ङ) बारहो बियोग बतावऽ ।

लिखित :

1. 'मधुमास' कविता के रचयिता राम नरेश पाठक पर चार वाक्य लिखऽ आउ उनकर दू गो रचना के नाम बतावऽ ?
2. मधुमास के अयला पर परकिरती में कउन-कउन परिवर्तन हो जाहे ?
3. मन मोहे ओला मधुमास के कुछ दिरिस बतावऽ ?
4. खेत आउ खरिहान सउँसे जहान में मधुमास कउन–कउन रस लेके आवऽ हे ?
5. संदर्भ सहित भाव लिखऽ :—
   (क) खेतवा-पथरिया में बइठल गुजरिया के नैना के अबिरिया उड़ाये / धरती तो धरती ऊ हुलसइ अकसवा कि धनिया के रूप न भुलाये / कोयली के बँसुली से पिलकइ दरुअवा जे पिलकइ दरुअवा, ई जुलुम भेलइ हो ।
   (ख) छोटकी ननदिया सैंया कलकितया गोरे-गोरे पतिया पेठाये / अबकी के होलिया हम्मे धनि मिलबइ / बारहो वियोग न सहाये ।
   फगुनो बयरिया से रसे-रसे बहकइ, जे रसे-रसे बहकइ सुलगि उठलइ हो, ई जुलुम भेलइ हो।

भासा-अध्ययन :

1. कविता में आयल बिम्ब आउ प्रतीक चुन के लिखऽ ? तू ओकरा से कहाँ तक सहमत हऽ ?
2. कवि के छंद आउ अलंकार के नाम देइत बतावऽ कि तोरा ई कइसे परभावित कर रहल हे ?
3. कविता में कुछ तत्सम सबद के परयोग भेल हे, ओकरा छाँट के लिखऽ।

योग्यता-विस्तार :

1. आज पर्यावरण परदूसन आउ ई 'मधुमास' कविता के मिलल-जुलल भाव पर अप्पन विचार व्यक्त करऽ ।
2. मधुमास से संबंधित दू गो कविता विद्यालय पुस्तकालय से उपलब्ध करके विसय सिच्छक के सुनावऽ।
3. नवगीत केकरा कहल जाहे ?

सब्दार्थ :

मधुआ	—	मिठास से भरल
मातल	—	परभावित
उरबसिया	—	इन्द्रलोक के एगो परी
चिनगी	—	तितकी
खेतवा-पथरिया	—	खेत-बधार
गुजरिया	—	गाँव के अउरत
नयना	—	आँख
वियोग	—	बिछोह
रसे-रसे	—	गते-गते ।

●●●



बाबू लाल मधुकर



कवि **बाबू लाल मधुकर** के जनम 8 सितम्बर 1940 के नालंदा जिला के ढेकवाहा गाँव, (इस्लामपुर) में भेल। 'रमरतिया' इनकर ख्याति प्राप्त उपन्यास हे जेकर अनुवाद रसियन भासा में भी होल हे । 74 आंदोलन के कवि के रूप में चर्चित मधुकर जी के **'लहरा'**, **'अँगुरी के दाग'**, **'मितवा के नाम'** आदि कविता संगरह हे। **'अलगंठवा'** उपन्यास अप्पन अमिट छाप छोड़ रहल हे । **'नयका भोर'** नाटक के भी काफी सोहरत भेल। राज्य सरकार के राजभाषा विभाग आउ राष्ट्रभाषा परिषद् से भी ई पुरस्कृत हो चुकलन हे। ई साहित्य कोटा से बिहार विधान परिषद के सदस्य रह चुकलन हे।

कवि बाबूलाल मधुकर 'तोहरे नाम' पाती के माध्यम से बतलावे के कोसिस करित हथ कि सब साधन होला के बावजूद छेत्तर में आसान्ति हे। भुखमरी, बेरोजगारी मुँह बयले हे। गरीब के केवाला जमीन मँहगाई के मार से रेहन हो रहल हे। तइयो में भयावह स्थिति के विरोध के स्वर सुनाई न पड़ रहल हे। ई ताज्जुब के बात हे।

तोहरे नाम

लिखलियो कोई हरफ,
कि कोई पाँती,
उगलो तोहरे नाम
कि जुड़लो छाती।

घिरलो हे घनसाम इहाँ
फिर भी लहलह घाम इहाँ
मठ-मंदिल-मसजिद के पचड़ा में

बदनाम हको हर धाम इहाँ।

निरैठा-निरगुन-अमनिया में
हो भेद बहुत,
निगरल-निखरल तोहरे रूप सगुनिया
कि मुसकइ संझा बाती।

जन-जन में हाहाकार भरल हो,
हर बोली में गोली कि गरल भरल हो,
पटौर पड़ल हो नक्सा पर हर गाँव इहाँ,
नगर-डगर हो तातल कि
अलकतरा तरल भरल हो।

खखन धरती परती पर गाजे धान
कि नाचे मोर,
हरखे मन कुरचे बरसऽ बूँद सेवाती।

घर के आँटा गिला भेलो,
कुछ रेहन केवाला भेलो,
घर में भूँजी-भाँग नयँ तनिको,
फिन भी मुँह पर ताला भेलो,
गुमसुम हको रात कि चुप्पी साधले बात
अइसन में तूँ छेड़ऽ राग पराती।

गंगा तट पर भीड़ जुटल हो,
धुनी रमल हो पापी-पुन्नी के,
होतइ कब इंसाफ इहाँ पर
असली-नकली खूनी के,
तेतर तिवारी पान लगावइ,

रोज रजेसर खोलइ रोजा,
गंगा मइया तोहिं बेड़ा पार लगावऽ,
हम तो तोहरे थाती।

लिखलियो कोई हरफ कि कोई पाती,
उगलो तोहरे नाम कि जुड़लो छाती।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) कवि के छाती कइसे जुड़ल ?

   (ख) धार्मिक झगड़ा-झंझट कउन पारा में आयल हे ?

   (ग) 'मुसकइ संझा-बाती' के मतलब का हे ?

   (घ) गंगा तट पर भीड़ काहेला जुटल हे ?

   (ङ) राग-पराती का हे ? कवि एकरा छेड़ेला काहे कह रहल हे ?

लिखित :

1. कवि बाबूलाल मधुकर के चार पंक्ति में परिचय दऽ ।
2. 'घिरलो हे घनसाम इहाँ' के जरिए कवि का कहेला चाह रहल हे ?
3. निम्नलिखित पंक्ति के भाव बतावऽ :

   (क) जन-जन में हाहाकार भरल हो,
   हर बोली में गोली कि गरल भरल हो,
   पटौर पड़ल हो नक्सा पर हर गाँव इहाँ,
   नगर-डगर हो तातल कि
   अलकतरा तरल भरल हो ।

4. नीचे लिखल पंक्ति के संदर्भ सहित व्याख्या करऽ :—

   (क) घर के आँटा गिला भेलो,
   कुछ रेहन केवाला भेलो,

घर में भूँजी-भाँग नयँ तनिको,
फिर भी मुँह पर ताला भेलो ।

भासा-अध्ययन :

1. कविता में आयल सहचर सबद के छाँट के लिखऽ ?
2. 'गुमसुम हको रात कि चुप्पी साधले बात' के माध्यम से कवि का कहेला चाह रहल हे ?
3. कविता के सिल्प-सौन्दर्य पर परकास डालऽ ?
4. 'रोज रजेसर खोलइ रोजा' के मतलब समझावऽ ?

योग्यता-विस्तार :

1. (क) तूहूँ एगो अइसने पाती लिखऽ (गद्य इया पद्य में)

   (ख) ई कविता कउन तरह के हे ?

   (i) श्रृंगारिक (ii) प्रगतिवादी (iii) समकालीन (iv) प्रयोगवादी ।

   (ग) पाठ से पाँच गो मुहावरा चुनके अरथ सहित वाक्य बनावऽ।

शब्दार्थ :



हरफ	—	अच्छर;
निरइठा	—	सुद्ध;
अमनिया	—	पवित्तर;
निखरल	—	साफ-सुथरा;
पटौर	—	पेटकुनिए;
तातल	—	धीपल;
खखन	—	बेयगर;
गुमसुम	—	चुपचाप;
राग-पराती	—	अनमुहान में गावे ओला सुरे गीत,
इंसाफ	—	न्याय

●●●



चंद्र प्रकाश माया

जनम	: 2 जनवरी 1947
आवास	: बी०-104, पुष्पांजलि कुंज, आशियाना, दीघा रोड, पटना-25
सिच्छा	: एम.ए. (हिन्दी)
परकासित किरती	: फूल-पात, तुम्हारे नाम (कविता संकलन)
संपादन	: स्वर-त्रयी
सम्मान	: बिहार राष्ट्रभाषा परिषद द्वारा हिन्दी कविता लागी साहित्य सेवा पुरस्कार

इनकर रचना के भासा सरल, सहज आउ सुबोध हे। इनकर गीत मन के बहुत गहराई तक छुअऽ हे जेकरा में बिसेस किसिम के ताजगी हे। गीत-गजल में इनका राएट्रीय ख्याति प्राप्त हो चुकल हे। ई कविता में कवि पर्यावरन के परदूसन से पाठक के अवगत करा रहलन हे।

एगो पेड़ रोप लऽ

फेंकऽ नयँ गंदगी कहूँ इधर-उधर हो भाई,
रखऽ तूँ साफ-सुथरा गउआँ-सहर हो भाई !

पानी में घुले लगल जहर, बदबू भरल हवा,
हरदम बहारते चलऽ डगर-डगर हो भाई !

गर हो सके तऽ तूहूँ एगो पेड़ रोप लऽ,
जयतबऽ उहँइ छँहुरा दिन भर ठहरऽ हो भाई !

मत खेलऽ तू धुआँ से कबहूँ धुआँ समझ के,
ढयतवऽ एक दिन इहे धुआँ कहर हो भाई !

कुदरत से हमनी अगर जे होवित रहम अलग,
बेमार होके जयबऽ बेमौत मर हो भाई !

करिहऽ न गंगा-जमुना के पानी कभी मइला,
एकरे से गाँव-गाँव पहुँचत नहर हो भाई !

पर्यावरन से 'माया' नयँ छेड़-छाड़ करिहऽ,
फटे लगल ओजोन के अब तो कवर हो भाई !

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) धुआँ कउची से निकलऽ हे ?
   (ख) पेड़ रोपेला काहे कहल जा रहल हे ?
   (ग) पानी में जहर कइसे घुल रहल हे ?
   (घ) गाँव-सहर के साफ-सुथरा रखे से का फायदा हे ?
   (ङ) हवा में बदबू कइसे भरऽ हे ?

लिखित :

1. (क) चन्द्र प्रकाश माया के परिचय दऽ।
   (ख) छहुँरा ला का उपाय करे के चाही ?
   (ग) गंगा-जमुना कउन चीज के प्रतीक हे ?
   (घ) पर्यावरन से छेड़-छाड़ कइसे हो रहल हे ?
   (ङ) ओजोन का हे ? एकरा कइसे बचावल जा सकऽ हे ?
   (छ) जब मेघ बरसऽ हे तब का दिरिस नजर आवऽ हे ?

भासा-अध्ययन :

1. पाठ से तीन गो सहचर सबद बतावऽ ।
2. नीचे लिखल सबद कउन समास हे, बतावऽ :—
   इधर-उधर, दिन भर, बेमौत, हरदम, गंगा-जमुना
3. नीचे लिखल सबद से बिसेसन बनावऽ :
   सहर, दिन, बेमार, कुदरत, गाँव

योग्यता-विस्तार :

1. 'पर्यावरन' पर एगो छोटा निबंध लिखऽ।
2. 'पर्यावरन' पर किलास में एगो विचार-गोस्ठी रखऽ।

सब्दार्थ :

बदबू	—	खराब गंध
छँहुरा	—	छाँह
कुदरत	—	ईस्वरीय, प्रकृति
कवर	—	ढक्कन

●●●





कृष्ण चंद्र चौधरी

कृष्ण चंद्र चौधरी के जनम 11 जनवरी 1954 के वजीरगंज, गया में भेल। इनकर हिन्दी कविता संगरह **'मासूम चेहरे की हँसी'** परकाशित हे। ई समकालीन कविता के चर्चित हस्ताक्षर हथ। ई बेहतरीन गीत अउ गजल भी लिखऽहथ।

कृष्ण चंद चौधरी 'मत जा छोड़के गाँव चिरइयाँ' कविता में मध्य बिहार में व्याप्त भय आउ आतंक के बातावरन के चित्र खींचलन हे। नक्सलवादी आंदोलन के चलते भूपति आउ भूमिहीन के बीच मार-काट मचल हे। गाँव से सांति आउ स्नेह अलोप हो चुकल हे। एगो अनजान भय व्याप्त हे, कखनी कउन कहाँ मारल जायत। कब केकर गाँव इया टोला पर गोहार हमला बोल देवत। लोग गाँव में रहना न चाह रहल हे। कवि चिरँई के माध्यम से जनता के गाँव छोड़के न जाए के सलाह दे रहल हे।

मत जा छोड़ के गाँव चिरैयाँ

अइसन मचल हे हाहाकार
गांव में कि अप्पन परछाई देख
डरे लगल हे अदमी

केकरो पर विस्वास न रह गेल,
सब के सब भय के चादर ओढ़ले
मनावइत हे जिनगी के खैर
न हे आँख में ममता के लोर
आउ न उठऽ हे हिंरदा में प्यार के हिलोर

तइयो पोखर पर पहरुआ नियन
खड़ा हे बूढ़ा पीपर,

अभी बचल हे उनखर छाँव,
ठहर जा एही ठाँव चिरैयाँ !
मत जा छोड़ के गाँव चिरैयाँ!!

फन उठौले साँप नियन लगऽ हे रात,
भला अइसन में केकर आँख में उतरे नींन,
दुआरी दन्ने टकटक्की लगइले
बइठल रहऽ हे अदमी,
पता न कन्ने से आ जाय पगलायल भीड़
आउ घर के घर रौंदते गुजर जाय
आतंक भरल महौल में

कउन गयतो गीत–
का सुनयतो कजरी-झूमर,
कम से कम बचल रहे जिनगी के राज,
तू ही गावऽ गीत प्रीत के,
मत जा छोड़ के गाँव चिरैयाँ!

जात-पात के ईंधन से
धधकल आग में
कब तक झुलसइत रहत अदमी,
अब तो नेह के बरखा से ही
एकरा बुतावे के जरूरत हे।

खोंता में बइठल सुते से
कुछ काम न बनतो,
आगे आवऽ, हम भी हियो तोहर साथ,
न थकल रहऽ हे हम्मर पाँव,
भाग के तू कन्ने जयबऽ

ठहर जा एही ठाँव चिरैयाँ !
मत जा छोड़ के गाँव चिरैयाँ !!

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) कविता में चिरैयाँ केकरा कहल गेल हे ?
   (ख) अदमी अप्पन परछाई देख के काहे डरे लगल हे ?
   (ग) 'बूढ़ा पीपर' के माध्यम से कवि का कहेला चाह रहल हे ?
   (घ) कवि कउन चीज के बुतावे ला कह रहल हे ?
   (ङ) कवि के पाँव थकल न हे, समझावऽ।

लिखित :

1. कवि कृष्ण चंद्र चौधरी के परिचय दऽ (पाँच वाक्य में) ।
2. कविता में आज के माहौल कइसन हे, बतावऽ ।
3. आज के समय में पुरनका समय के कउन-कउन चीज भुला गेल हे ?
4. गीत के प्रीत गावेला का का करे पड़त ?
5. नीचे लिखल पंक्ति के संदर्भ सहित भाव लिखऽ :—

   (क) फन उठौले साँप नियन लगऽ हे रात/
   भला अइसन में केकर आँख में उतरे नींन /
   दुआरी दन्ने टकटकी लगइले /
   बइठल रहऽ हे अदमी ।

   (ख) तू ही गावऽ गीत प्रीत के /
   मत जा छोड़ के गाँव चिरैयाँ /
   जात-पात के ईंधन से
   धधकल आग में /
   कबतक झुलसइत रहत अदमी ?

भासा-अध्ययन :

1. कविता के भासा कइसन हे समझावऽ (पाँच वाक्य में) ।
2. कविता से तोरा का संदेस मिलऽ हे ?
3. समाज में समरसता कइसे लावल जा सकऽ हे ? एकरा बारे में पाँच वाक्य लिखऽ ।
4. कविता में कउन रस हे ? ओकरा पर एगो पोस्टर बनावऽ ।
5. कविता से मुहाबरा चुनके अरथ लिखऽ।

योग्यता-विस्तार :

1. (क) आतक भरल माहौल कइसन होवऽ हे, अप्पन समझ से बतावऽ।
   (ख) 'पगलायल भीड़' के तू कइसे सही रहता पर ला सकऽ हऽ ?
   (ग) धधकल आग का हे ? ओकरा कइसे बुतावल जा सकऽ हे ?
   (घ) खोंता में न बइठके तू का करबऽ ?
   (ङ) गाँव के वर्तमान माहौल पर विद्यालय में एगो विचार-गोस्ठी करऽ ?

सब्दार्थ :

खैर	—	ठीक-ठाक
हिलोर	—	हलफा
पहरुआ	—	पहरेदार
छाँव	—	छाँह
आतंक	—	उत्पात
ईंधन	—	जरना







चन्द्रावती चंदन

चन्द्रावती चंदन विकास काल के एगो ससक्त हस्ताक्षर हथ। इनकर जनम पटना जिला के बिक्रम थाना के बेनीबिगहा गाँव में 22 जनवनरी 1968 में भेल हल। इनकर पिता के नाम रामदास आर्य आ माता के नाम चिन्तामणि देवी हे। इनकर प्रारम्भिक सिच्छा गाँव में ही भेल। 1983 में मैट्रिक परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होके बी०ए० प्रतिष्ठा (इतिहास) मुहंथ महादेवानंद महिला महाविद्यालय आरा, भोजपुर से कइलन आ एम० ए० (इतिहास) एच० डी० जैन कॉलेज आरा, भोजपुर से पास कइलन। ई मगही में भी एम.ए. हथ। प्रयाग संगीत समिति से संगीत में सीनियर डिप्लोमा भी कइले हथ। साक्षरता गीत कैसेट 'जन्म दिया तो शिक्षा दो आउ भोजपुरी देवी गीत **'माई तोहरे चरन सुखदाई'** कैसेट में मुख्य गायिका के रूप में गीत गयलन हे।

साहित्य के प्रति बचपन से ही इनका लगाव हल। जब ई अठवाँ क्लास में पढ़ऽ हलन तबहिए से कविता लिखऽ हलन आ स्कूल के सांस्कृतिक कार्यक्रम में सुनावऽ हलन। आकाशवाणी पटना से कई बार कविता पाठ भी कइलन। आकाशवाणी पटना में **'मागधी'** प्रोग्राम में कम्पीयर के रूप में कार्य कइलन। मगही पत्रिका **'अलका मागधी'** में इनकर कविता, लेख छपइत रहऽ हे। साठी में भी इनकर कविता छपल हे। एकरा अलावे विभिन्न पत्र-पत्रिका में इनकर कविता, कहानी आ लेख छपइत रहऽ हे। सहार, भोजपुर के अन्हारी पंचायत से चुनाव में जीत के पंचायत समिति सदस्य के रूप में भी पाँच साल तक जनता के सेवा कइलन।

इनकर कविता में जीवन के सच्चाई होवऽ हे। इनकर कविता बनावटीपन से दूर जे अदमी अप्पन जीवन में संघर्स, दरद, टीस, वेदना, कसक के महसूस करऽ हे ओही इनकर कविता के सच्चाई हे। इनकर छायावादी कविता में प्रकृति के मानवीकरण के साथ-साथ जीवन के यथार्थ के पुट दिखाई पड़ऽ हे।

हिन्दी मगही, भोजपुरी में इनकर प्रमुख रचना हे जे अपरकासित हे—

(क) कल्पना—कविता संगरह ।

(ख) अतीत की याद—कहानी संगरह ।

(ग) टूटल तार (मगही एकांकी संगरह) ।

(घ) बसंती बेयर—लोकगीत संगरह ।

(ङ) बिखरल मोती—मगही कविता संगरह ।

अभी ई रजा हई स्कूल अनीसाबाद, पटना में अध्यापन कार्य करइत साहित्य सेवा में जुड़ल हथ।

'कलम' सीर्सक कविता यथार्थवादी कविता हे । ई कविता के जरिए कवयित्री जीवन के ऊ सच्चाई से रूबरू करावेला चाहलन हे जेकरा से अदमी अनजान बनल हे । गुलाब के फूल के हँसइत तो सब कोई देखऽ हे बाकि ओकर काँटा के चुभन के महसूस कोई न करे । मंदिर में मन के भरम मिटावेला देवी दुर्गा के पूजा तो करऽ हथ लोग बाकि घर के लक्ष्मी अँगना में कुँहकऽ हे, छछनऽ हे, फिर ई कइसन देवी-दुर्गा के पूजा हे ? अपना-अपना तो सब कहऽ हथ। रिस्तेदार के रूप में अँगुरी पर गिनवावऽ हथ बाकि जब दुख पड़ऽ हे तो अपना भी सपना हो जा हथ। ई कविता में उहे अनकहल, अनछुवल, अनसहल आ अनबूझल पीड़ा के कवयित्री अप्पन 'कलम' कविता के माध्यम से व्यक्त कइलन हे।

कलम

ए कलम कुछ गावऽ
जिनगी के गीत सुनावऽ

अब तक कहलऽ
बहइत नदिया के,
किलकित छलकित धारा के,
चिक्कन-चाकन, सजल-सँवरल
हँसइत कनिया धरती के,
गिरि से झरइत झरना के,
आह—कराह बतावऽ,
ए कलम कुछ गावऽ,
जिनगी के गीत सुनावऽ

सांत देखइलऽ सागर धरती,
आसमान चुप बादर,
सांत देखइलऽ चंदा-सूरज
सांत देखइलऽ काजर

तनी देखावऽ लहर सगरवा,
बदरा के गरज सुनावऽ,
ए कलम कुछ गावऽ,
जिनगी के गीत सुनावऽ

दूध-गंगा जल फूल से लदल
देखली देवी मंदिल में,
लछमी के रोवइत देखली
अपने घर के अंदर में,
दिन में सुतल उलुआ के
ठोकर देके जगावऽ,
ए कलम कुछ गावऽ,
जिनगी के गीत सुनावऽ

बहुत सुनइलऽ बाग बहार के,
बिहँसइत कमल कींचड़ के,
बाकि काँटा पर गुलाब के
टीस जरी बतावऽ,
ए कलम कुछ गाबऽ,
जिनगी के गीत सुनावऽ

अप्पन धरती अप्पन सबके
पियार-दुलार-ममता के,
गइया गोदी बाछी के,
अपनापन के ढोल पिटवयलऽ,

अँगुरी पर गिनवयलऽ
बाकि चोट मिलल ममता के
आके धीरज बँधावऽ,
ए कलम कुछ गावऽ

आगे गहिरा नदिया मिलल,
पीछे आग-समुन्दर,
बीच टीला पर खड़ा हे अदमी,
हाल हे साँप छुछुन्दर के,
अँगुरी धर के पार करावऽ,
आके राज देखावऽ,
ए कलम कुछ गावऽ

बाहर भीड़ कत्ते अदमी के,
गूँजे गीत हँसी के सोता,
भीतर झाँकऽ हर अदमी के
जिनगी उजड़ल खोंता,
सहेज-सहेज के एक-एक तिनका
सुन्नर घर बनावऽ,
ए कलम कुछ गावऽ

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) कवयित्री कलम से का करेला कह रहल हे ?

   (ख) 'अब तक कहलऽ बहइत नदिया के' से का मतलब निकलऽ हे ?

   (ग) कवयित्री बदरा से गरज सुनावेला कउन मतलब से कह रहल हे ?

   (घ) बादर आउ काजर के प्रयोग कउन अरथ में कयल गेल हे ?

   (ङ) काँटा पर गुलाब के अरथ बतावऽ ।

लिखित :

1. कवयित्री चन्द्रावती चंदन के परिचय पाँच वाक्य में लिखऽ।
2. कवयित्री कलम से जिनगी के गीत सुनावेला काहे कह रहल हे ? दस वाक्य में लिखऽ।
3. आज के पहिले कलम जे काम कयलक हल, ओकरा में चार गो काम बतावऽ ?
4. नीचे लिखल पंक्ति के आसय लिखऽ :—

   (क) अब तक कहलऽ
   बहइत नदिया के/
   किलकित छलकित धारा के/
   चिक्कन-चाकन, सजल सँवरल
   हँसइत कनिया धरती के/
   गिरि से झरइत झरना के/
   आह कराह बतावऽ

5. नीचे लिखल पंक्ति के संदर्भ सहित व्याख्या करऽ :—

   (क) भीतर झाँकऽ हर अदमी के सहेज-सहेज के एक-एक तिनका सुन्नर घर बनावऽ।

   (ख) भीतर झाँकऽ हर अदमी के
   जिनगी उजड़ल खोंता
   सहेज-सहेज एक-एक तिनका
   सुन्नर घर बनावऽ

भासा-अध्ययन

1. कविता में जउन बिम्ब आउ प्रतीमान आयल हे, ओकरा बतावऽ (आठ वाक्य में)
2. ''अँगुरी धर के पार करावऽ'' कवयित्री अइसे काहे कह रहल हे ?
3. 'हाल हे साँप छुछन्दर के' के मतलब का हे

योग्यता-विस्तार :

1. (क) कलम पर लिखल दू गो कविता खोज के लिखऽ, आउ कक्षा में सुनावऽ।

(ख) तोर विचार से कलम के दोसर आउ कउन भूमिका हो सकऽ हे ?

(ग) तोर विचार से कविता के भाव 'सत्यं सिवं सुन्दरं' के केतना नजदीक हे ?

(घ) 'कलम' कविता कउन तरह के हे ?

(i) प्रगतिवादी (ii) प्रयोगवादी (iii) छायावादी (iv) समकालीन ।

(ङ) कविता में आयल सबद के चुनाव केतना सही हे ?

सब्दार्थ :

जिनगी	—	जीवन
नदिया	—	नदी
किलकित	—	कलकल करित
गिरि	—	पहाड़
कराह	—	कुहरना
आह	—	कसक
टीस	—	दरद
पियार	—	प्रेम
गहिरा	—	गहरा
सोता	—	स्रोत ।



•••

पाठ्यक्रम

1. भासा कौसल के विकास करना, जइसे सुनना, बोलना पढ़ना आउ लिखना। पाठ्यक्रम के ई उद्देस्य हे कि पढ़ेवला के सर्जनात्मक साहित्य से संबंधित आलोचनात्मक क्षमता के विकास हो सके। विद्यार्थी स्वतंत्र आउ मौखिक रूप से अप्पन विचार के अभिव्यक्त कर सके, अइसन क्षमता के विकास करना, साथ ही रास्ट्रीयता, धर्म, लिंग, भासा आदि के प्रति संवेदनसील आउ सकारात्मक दृस्टि के विकास करना।
2. छात्र के ज्ञान के छेत्र के विस्तार करना, ताकि ऊ अखबार में आवेवला व्यक्ति, परिवेस, समाज, संस्कृति आदि के जानकारी रख सके।
3. छात्र में मानसिक दक्षता आउ कौसल के अइसन विकास करना कि ऊ वाद-विवाद, चर्चा, भासन आदि में समर्थ प्रतिभागिता के प्रमाण दे सके। ओकर मानसिक-बौद्धिक गुन के विकास करके व्यक्तित्व के सम्पन्न बनाना।
4. मगही भासा आउ साहित्य के पढ़ाई के जरिये भारत के समृद्ध सांस्कृतिक विविधता के समझना आउ ओकर अच्छाई के आत्मसात करे के समझ पैदा करना, जइसे जातिवाद, वर्गवाद, ऊँच-नीच के संकीर्ण मनोभाव के दूर करना आउ धरम सम्प्रदाय के प्रति कट्टरता दूर करके मन में सहिस्णुता, सद्भाव, उदारता आउ सहज अपनापन के भाव उत्पन्न करना।
5. विद्यार्थी में अइसन मानसिक-बौद्धिक क्षमता के विकास करना, ताकि ऊ अप्पन उत्तरदायित्व समझ सके आउ पाठ्य-पुस्तक के अलावे अन्य तरीका अपना के अप्पन मनचाहा ज्ञान, समझ, दृस्टिकोण, अभिरूचि, संस्कार के सँवारे आउ बढ़ावे में सफल हो सके। सम्वादी चेतना के जादे से जादे विकास करना।
6. आधुनिक समाज के विविध सरोकार के प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति करे के कौसल के विकास करना, जइसे पर्यावरण, परिवेस, संवैधानिक दायित्व, लोक-संस्कृति, व्यापार-वाणिज्य, विविध व्यवसाय, बाजार-सिनेमा, खेल जगत, नाटक, नृत्य-संगीत, उद्योग-धंधा, खेती, मिडिया, विज्ञान जगत, पर्वत-समुद्र-अंतरिक्ष, राजनीति, धर्म आदि।
7. नवमा-दसमा वर्ग में अइसन कोसिस कइल गेल हे कि विद्यार्थी साहित्य के सब्भे विधा से परिचित हो जाय। ओही कौसल के आगे विकास के प्रयास करना।
8. मौलिकता, कल्पना, सृजनात्मकता आउ सौन्दर्यप्रियता के भावना के विकास क ।

9. इगरहवाँ वर्ग के बच्चा किसोरावस्था में आ जाहे, ई लेल किसोर मनोविज्ञान के ध्यान में रख के ओकर मनोवैज्ञानिक जिज्ञासा के पूर्ति करना।

10. भासा-साहित्य के अध्ययन से छात्र के मनोभाव के उदात्त बनाना आउ ओकरा में सद्‌वृत्ति के विकास करके चरित्र-निर्माण करना।

11. ई वर्ग के छात्र में समझदारी के विकास हो जाहे। ई लेल छात्र के अन्दर रास्ट्रीय-एकता, रास्ट्र-गौरव आउ संस्कृति के प्रति अनुराग के विकास करना।

12. आज संचार तकनीक बहुत आगे बढ़ चुकल हे। ई लेल संचार माध्यम में प्रयुक्त मगही के प्रकृति से अवगत कराना, नया-नया तरीका से प्रयोग करे के क्षमता के विकास करना।

13. विदेसी भासा के साथ-साथ गैर मगही भारतीय भासा के संस्कृति से परिचय कराना।

14. दैनिक आउ बेयोहारिक जिनगी में तरह-तरह के तरीका से अभिव्यक्ति के व्यक्त करे के क्षमता के विकास करना, चाहे ऊ मौखिक होवे इया लिखित।

15. किसोर उमर के अनुसार विस्लेसन, स्वतंत्र अभिव्यक्ति आउ तर्क-क्षमता के विकास करना।

16. छात्र में भासा के समावेस आउ बहुभासी प्रकृति के प्रति ऐतिहासिक दृस्टिकोण के व्यापक विकास करना।

17. किसोर उमर में सारीरिक आउ मानसिक रूप में कई तरह के परिवर्तन हो जाहे। ई लेल जउन भी चुनौती आवे छात्र ओकर सामना कर सके, एकरा ला ऊ अप्पन क्षमता आउ प्रतिभा के विकास करेला भासा के माध्यम बना सके।

18. किसोर उमर अयते स्व-अनुसासन के जरूरत पड़ऽ हे, जेकरा ला किसिम-किसिम के ज्ञान के अनुसासन, भासा के विमर्स के माध्यम से मगही के क्षमता के बोध कराना।

19. किसोर उमर के कारन बच्चा के मानसिक विकास कुछ ई ढंग से हो जाहे कि ओकरा में वैचारिक स्तर पर मतभेद, विरोध आउ टकराव के परिस्थिति आ जाहे। ई लेल ऊ परिस्थिति के तर्कपूर्ण आउ संवेदनसील व्यवहार से सान्तिपूर्ण संवाद के क्षमता के विकास करना।

20. भासा आउ साहित्य के मजबूती व्याकरण आउ रचना के जानकारी से होवऽ हे। ई लेल मगही व्याकरण आउ रचना के एगो अलग किताब रहत जेकरा आधार पर पाठ्य-पुस्तक के साथ-साथ बाहर के परिवेस से छात्र में भासागत कौसल के विकास होयत।

—



आवरण पृष्ठ एवं डिजाइन ज्ञान सिक्योरिटी प्रेस (प्रा०) लि०, लखनऊ द्वारा मुद्रित